डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 15-07-2020

विषय- वैदिक साहित्य

वेद का स्वरूप

विद् (जानना) धातु से निष्पन्न 'वेद' शब्द का अर्थ है- ज्ञान । इस रुप में वेद अनंत ज्ञान का अनंत भंडार माना जाता है।

वेद शब्द का व्यवहार सदा बहुवचन में होता है अर्थात वेद है ऐसा न कह कर, वेद हैं ऐसा कहा जाता है। इस दृष्टि से कुरान, बायबिल, त्रिपिटक की भांति का कोई एक धर्म ग्रंथ वेद नहीं है अपितु वेद तो ज्ञान की एक राशि है। साहित्य का यह बड़ा भंडार है, जिसका प्रादुर्भाव अनेक शताब्दियों में भारत के ऋषियों की अनेक पीढियों द्वारा हुआ है। भारत के प्राचीन मनीषियों ने विश्व के आध्यात्मिक चिंतन विषयक चिरंतन तत्वों को ही वेद में प्रस्तुत किया है।

प्राय: मंत्रों वाली संहिताएं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद को ही वेद माना जाता है अर्थात इनके अतिरिक्त जो ब्राम्हण, आरण्यक और उपनिषद् ग्रंथ है वह वेद नहीं है, किंतु ऐसी बात नहीं है- "मंत्रब्राम्हणयोर्वेदनामधेयम्।"

यह उक्ति इस विषय में प्रमाण है कि मंत्रों (मूल संहिता) के साथ ही साथ ब्राम्हण (मंत्रों के व्याख्या ग्रंथ) भी वेद ही है । इसके साथ ही आरण्यक एवं उपनिषद् भी ब्राह्मण ग्रंथों के ही अंश है ,क्योंकि जैसे ब्राह्मणों में संहिताओं के मंत्रों की विधिपरक व्याख्या है, वैसे ही आरण्यको में मंत्रों की ज्ञान परक व्याख्या है तथा उपनिषदों में मंत्रों के दर्शनपरक व्याख्या है। व्याख्या ग्रंथ होने के कारण आरण्यक और उपनिषद भी ब्राम्हण ही है तथा इसमें उद्धृत मंत्र और ब्राह्मण दोनों को ही वेद कहा गया है।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मंत्रों वाली संहिताएं तथा उनके व्याख्या परक सभी ग्रंथ ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद भी वेद हैं।

संहिता- भेद से वेद चार प्रकार के हैं

A. ऋग्वेद- ऋचाओं का वेद।
B. यजुर्वेद- यजुषों (मंत्रों) का वेद
C. सामवेद- सामों(गीतियों)का वेद
D. अथर्ववेद- अथर्वो का वेद।

शैली- भेद से वेद तीन प्रकार के हैं -वेदत्रयी।

1. पद्यात्मक वेद- अर्थात ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के छंदोंबद्ध मंत्र।
2. गद्यात्मक वेद-अर्थात यजुर्वेद और अथर्ववेद का गद्यात्मक अंश और ब्राह्मण ग्रंथों , आरण्यको और उपनिषदों का गद्य।
3. गीतात्मक वेद,- अर्थात सामवेद का गेयात्मक अंश।

मूल और व्याख्या भेद से वेद दो प्रकार के हैं-

1. ऋचाएं और मंत्र जिन्हें सम्मिलित रूप से मंत्र कहा जाता है।
2. मंत्रों की व्याख्यावाला 'ब्राह्मण' भाग ।

इस प्रकार वेद के विभिन्न रूपों को स्पष्ट करने के लिए पृथक पृथक शब्दावली का व्यवहार किया जाता है।